“सेफ” ने “संवाद” के लॉन्च के साथ पदार्थों की पर्यावरणीय संवहनीयता पर रचनात्मक वार्ता का रास्ता खोला

नई दिल्ली, 14 अप्रैल, 2021 : अपशिष्ट प्रबंधन से निपटने के लिए सरकार द्वारा किए गए आवश्यक बदलाव के साथ भारत पदार्थों की संवहनीयता की नीति परिदृश्य में परिवर्तन का अनुभव कर रहा है। जैसे-जैसे पर्यावरण की स्थिरता पर बातचीत का दायरा गहराता जा रहा है। इस क्षेत्र के विशेषज्ञ विषय पर जागरूकता के लिहाज से देखने की जरूरत को और महसूस करते जा रहे हैं। सप्लाई चेन में पदार्थों की घटकों के रूप में या पैकेजिंग के तौर पर महत्व को समझा जा रहा है। इसी के साथ उन्हें अर्थव्यवस्था में इसके योगदान का महत्व भी समझ में आने लगा है। पर्यावरण को स्थिर रखने के लिए क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर विचार-विमर्श की शुरुआत करते हुए **साइंस अलायंस फॉर एनवॉयरमेंट (एसएएफई-सेफ)** ने 13 अप्रैल 2021 को अपनी आधिकारिक वेबसाइट और **न्यूज़लेटर “संवाद”** भी लॉन्च किया है। इसके तहत पदार्थों की संवहनीयता पर पूरा फोकस रखते हुए इस विषय पर वैज्ञानिकता के लिहाज से बातचीत की शुरुआत भी हो चुकी है।

सेफ ने विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञों को एक प्लेटफॉर्म पर एकत्र किया है। इसका उद्देश्य नीति निर्माताओं, मीडिया और आम जनता को कूड़े-कचरे के सुरक्षित निपटारे के संबंध में जागरूक करने के लिए सटीक जानकारी से लैस करना है। सेफ अपशिष्ट के सुरक्षित ढंग से निपटान के लिए सभी आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में इसके भरपूर इस्तेमाल के लिए शोध और नए-नए क्षेत्रों में इसके प्रयोग की पहचान से लेकर लोगों को जागरूक करने के लिए वर्कशॉप, सेमिनार और पैनल डिस्कशन तक अपनी वेबसाइट और संवाद, दो साधनों से सार्थक बातचीत की शुरुआत करेगा।

पुणे में नेशनल केमिकल लैबोरेटरी-सीएसआईआर के निदेशक **डॉ. आशीष लेले** ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के चेयरमैन और सेफ के सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष आईएएस **श्री सुधीर श्रीवास्तव** इस समारोह के सम्मानित अतिथि थे। कार्यक्रम में पद्मश्री पुरस्कार विजेता, आईएनएसए के वरिष्ठ वैज्ञानिक और पुणे में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आईआईएसईआर) के मानद प्रोफेसर **डॉ. एस. शिवाराम** के साथ पद्मश्री पुरस्कार विजेता और इंस्टिट्यूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी (आईसीटी) के पूर्व वाइस चांसलर **प्रोफेसर जी. डी. यादव** भी उपस्थित थे। इसके अलावा कार्यक्रम में भोपाल और जम्मू में एम्स के अध्यक्ष **डॉ. वाई. के. गुप्ता** भी मौजूद थे। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन की पूर्व सलाहकार (साइंटिस्ट “जी”) **मिस संचिता जिंदल**, पॉलिमर वैज्ञानिक और मुंबई में इंस्टिट्यूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी (आईसीटी) के सहायक प्रोफेसर **डॉ. विजय जी. हब्बू** ने भी कार्यक्रम में अपनी मौजूदगी दर्ज कराई।

डॉ. आशीष लेले ने कहा, "कोविड-19 के दौरान प्लास्टिक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि प्लास्टिक के प्रभावी इस्तेमाल के बिना कोविड-19 के मामलों को संभालना काफी मुश्किल था। भारत की जीडीपी बढ़ रही है। इससे पर्यावरण के प्रदूषण से निपटने के लिए आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल में भारत को मदद मिलेगी। नीति निर्माताओं को नीतियां बनाने के लिए वैज्ञानिकता के नजरिये से विचार विमर्श की जरूरत है। सेफ इसके लिए सही प्लेटफॉर्म है, जो भारत में नीति निर्माण के परिदृश्य को बढ़ावा दे सकता है।"

डॉ. जी. डी. यादव ने ऊर्जा, पदार्थों की सुरक्षा के महत्व और इसके विकल्पों पर ध्यान देने की जरूरतों के महत्व पर खास जोर देते हुए कहा, "ऊर्जा और पर्यावरण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। ईंधन, रसायन और पदार्थों के निर्माण के लिए तेल पर आधारित अर्थव्यवस्था स्थिर नहीं है। हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था को विकसित करने के भारत के पास अवसर है क्योंकि इनमें भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा देने और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की क्षमता है। हम एक थिंक टैंक सेफ को लॉन्च कर रहे हैं, जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञ शामिल हैं, जो पर्यावरण पर प्रभाव डालने वाले मुद्दों के लिए अपना समाधान और नजरिया पेश करेंगे।"

डॉ. एस. शिवाराम ने पर्यावरण की स्थिरता के लिए भौतिक पदार्थों का कम से कम उपयोग करने की जरूरत पर जोर देते हुए कहा, "हम कैसे पदार्थों का उपयोग कम से कम कर सकते हैं, जिसके लिए यह जरूरी है कि हम उनकी खपत कम से कम करें, जो इन पदार्थों के निर्माण के आर्थिक लक्ष्यों के अनुकूल हो। इन अप्रिय समस्याओं के समाधान के लिए हमें समाज में काफी गहराई तक प्रवेश कर चुके सांस्कृतिक और व्यावाहरिक बदलाव की जरूरत है। इसके लिए हमें आधारभूत ढांचे का फिर से निर्माण करना होगा और शहरों, राज्यों, क्षेत्रों और देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना होगा। इसलिए आपको सेफ और संवाद की जरूरत है, जिससे हम एक दूसरे से बातचीत कर सकें।"

अपशिष्ट के निपटारे के लिए जागरूकता के लिए कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए **डॉ. वाई. के. गुप्ता** ने इस विषय पर अपने व्यापक नजरिये को साझा करते हुए कहा, "जब हम गैरजिम्मेदाराना तरीके से प्लास्टिक बैग को कूड़ेदान या कूड़े के ढेर में फेंक देते हैं और पर्यावरण पर उनके प्रभाव के बारे में हैरत जताते हैं। उस समय हमें यह समझना चाहिए कि सबसे जरूरी चीज प्लास्टिक के दोबारा इस्तेमाल के बारे में जागरूक होना है। वैज्ञानिक रूप से 80 से 90 फीसदी प्लास्टिक का दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है। हमें प्लास्टिक का उचित तरीके से एकत्र करना चाहिए, उनका निपटारा करना चाहिए और उनका दोबारा इस्तेमाल करना चाहिए। सेफ और संवाद के माध्यम से हमारी बातचीत केवल किसी धारणा पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि वह साक्ष्यों और तर्कों पर आधारित होना चाहिए। इससे हमें नीतिगत निर्णय लेने में मदद मिलेगी।"

डॉ. विजय जी. हब्बू ने पदार्थों की स्थिरता पर बातचीत का आधार बनाने में सेफ की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा, "साइंस अलायंस फॉर एनवॉयरमेंट (एसएएफई) एक व्यावाहरिक

रोडमैप विकसित करने की कोशिश करेगा, जिससे बेहतरीन निर्णय लेने में मदद मिलेगी। इससे शोध और आधुनिकता के नए-नए आयामों को खोजने में मदद मिलेगी। हमारा ध्यान सिर्फ मटीरियल साइंस पर नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें कई दूसरे पहलुओं को भी स्पर्श करना चाहिए। इन दूसरे पहलुओं में स्वास्थ्य, न्यायप्रणाली, अर्थशास्त्र और नीति निर्माण के साथ निश्चित रूप से पर्यावरम का पहलू भी शामिल रहना चाहिए, जिसे हमारे नेटवर्क के विशेषज्ञों को संबोधित करना चाहिए। इसके साथ ही साइंस और टेक्नोलॉजी के आधार पर सुधार के कदम उठाने चाहिए।"

श्री सुधीर श्रीवास्तव ने पर्यावरण संकट की जटिलताओं को संबोधित किया और हमारे सामने मौजूद मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। "इसकी कुंजी है कि सभी मुद्दों का समाधान और सार्वजनिक क्षेत्र में की जा रही प्रगति को एक उद्देश्यात्मक एवं निरपेक्ष ढंग से किया जाए।"

इस समय दुनिया अपशिष्ट प्रबंधन करने के लिए जिस संकट से जूझ रही है, उसकी ओर इशारा करते हुए मिस **संचिता जिंदल** ने जोर देकर कहा, "संसाधन क्षमता और सर्कुलर इकोनॉमी के कॉन्सेप्ट को और अधिक प्रभावी ढंग से अपनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, सेफ के माध्यम से हमारा प्रयास इसके लिए सर्वोत्तम समाधान की तलाश करना है, जिसे अंतिम नहीं कहा जा सकता। यह सिर्फ एक शुरुआत होगी।"

वेबसाइट-https://www.safe-bharat.org/

न्यूजलेटर--http://www.safe-bharat.org/wp-content/uploads/2021/04/SAMVAAD-ISSUE-1.pdf